International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 02(I), April - June, 2023, pp. 104-106

पं. दीनदयाल उपाध्याय और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

विक्रान्त शर्मा*

सार

पं० दीनदयाल उपाध्याय जी का सम्पर्क जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से हुआ वह समय भारत की आजादी का महत्त्वपूर्ण समय था या यूँ कह लीजिए उस समय पूरे भारत में आजादी की एक लौ जल गई थी और पूरा देश भक्तिमय होकर देश को आजाद करवाने के लिए प्राणों की आहुति देने को तैयार था। दीनदयाल उपाध्याय बचपन से ही देश प्रेम की भावना से ओत–प्रोत थे तथा देश भक्ति उनके मन में कूट–कूट कर भरी हुई थी। 1937 में जब पं० दीनदयाल उपाध्याय कानपुर से बी०ए० कर रहे थे तो वह अपने एक सहपाठी बालूजी महाशब्दे की प्रेरणा से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आये। इसी दौरान कानपुर में ही इनको संघ के संस्थापक डा० हेडगेवार का सानिध्य मिला। इसके बाद पं० दीनदयाल उपाध्याय ने 1939 और 1942 में संघ का प्रशिक्षण पूर्ण किया और संघ के पूर्णकालिक प्रचारक बन गये तथा आजीवन संघ के प्रचारक रहे। संघ के प्रचारक रहते हुए इन्होंने संघ के लिए दिन–रात कार्य किया और संघ की उन्नति और विस्तार के लिए निस्वार्थ भाव से योगदान दिया।

शब्दकोशः *आजादी, संघ, प्रेरणा, प्रचारक।*

प्रस्तावना

पं० दीनदयाल के संघ में प्रवेश के बारे में जानने से पहले हमें दीनदयाल के जीवन के बारे में कुछ बातें जानना जरूरी है। पं० दीनदयाल उपाध्याय का जन्म जयपुर के धनकिया में 25 सितम्बर 1916 को हुआ था। कई लोगों को भ्रान्ति है कि उनका जन्म मथुरा के नगला चन्द्रभान में हुआ था, यहाँ स्पष्ट किया जाता है कि दीनदयाल जी के पिता का घर नगला चन्द्रभान में था लेकिन उस समय की सामाजिक परम्परा के अनुसार उनकी पत्नी रामप्यारी अपने प्रथम प्रसव के लिए अपने पिता के घर धनकिया गई थी वहीं पर पं० दीनदयाल का जन्म हुआ। पं० दीनदयाल का जीवन बहुत ही संघर्षों से भरा रहा। तीन वर्ष की उम्र में इनके पिता का देहांत हो गया। सात वर्ष की आयु में इनकी माता का भी देहान्त हो गया। उसके बाद इनके मामा राधारमण ने इनका पालन–पोषण किया। 1934 में इनके भाई को टाइफाइड हो गया, जो ठीक न हो सका और उनकी मृत्यु हो गई। इन सब विषम परिस्थितियों के बाबजूद भी पं० दीनदयाल ने अपनी पढ़ाई जारी रखी और अच्छे अंकों से अपनी उच्च शिक्षा तक की पढ़ाई पूरी की। जब पं० दीनदयाल बी०ए० की पढ़ाई कर रहे थे। तो यहीं पर अपने सहपाठी बालूजी महाशब्दे की प्रेरणा से संघ के सम्पर्क में आये और उनका संघ में प्रवेश हुआ।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें द्वित्यिक स्त्रोतों से सामग्री एकत्रित करके उनकी व्याख्या की गई है।

---

* शोधार्थी, दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केन्द्र, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश।

शोध के उद्देश्य

- पं० दीनदयाल उपाध्याय और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्बन्ध का अध्ययन करना।
- पं० दीनदयाल के संघ में किए महत्त्वपूर्ण कार्यों का वर्णन करना।

विषय

बचपन से राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत–प्रोत पं० दीनदयाल उपाध्याय का संघ में प्रवेश उनके सहपाठी और मित्र बालूजी महाशब्दे के कारण हुआ उनकी प्रेरणा से दीनदयाल संघ के सम्पर्क में आये और संघ के स्वयंसेवक बने। जब पं० दीनदयाल संघ के सम्पर्क में आये उस समय देश को आजादी दिलाने के आन्दोलन चरम सीमा पर थे। दीनदयाल उपाध्याय का युवा मन भी आजादी के आन्दोलन में शामिल होने के लिए ललाईत था। इन्हीं दिनों पं० दीनदयाल संघ के सम्पर्क में आए और संघ का कार्य उन्हें अपने मन के अनुकूल लगा। कानपुर में पं० दीनदयाल की भेंट संघ के संस्थापक डा० हेडगेवार से हुई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अनुशासित युवकों का एक संगठन था। वहाँ बिना प्रशिक्षण प्राप्त किए कोई स्वयंसेवक नहीं बन सकता था। दीनदयाल उपाध्याय ने 1939 में प्रथम वर्ष तथा 1942 में द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त किया। अपनी पढ़ाई पूरी करके तथा संघ का द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त करके पं० दीनदयाल संघ के प्रचारक बन गए। वह आजीवन संघ के प्रचारक रहे। पं० दीनदयाल उपाध्याय संघ के शारीरिक कार्यक्रमों को बहुत ठीक प्रकार से नहीं कर पाते थे परन्तु बौद्धिक कार्यक्रमों में वह हमेशा अव्वल रहते थे। उनकी बौद्धिक प्रखरता को देखते हुए 1945 में उन्हें सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश का सह–प्रान्त प्रचारक बना दिया गया था। पं० दीनदयाल उपाध्याय के संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवालकर जी से भी बहुत ही आत्मीय सम्बन्ध रहे। गोलवालकर जी को श्री गुरु जी भी कहा जाता था। अपने तथा दीनदयाल के सम्बन्धों के बारे में बताते हुए वह इसे गुरु और शिष्य का सम्बन्ध बताते थे। दीनदयाल जी का अपना कोई व्यक्तिगत जीवन नहीं था। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहे तथा बाद में जनसंघ को अपने जीवन का ध्येयकार्य उन्होंने संघ के स्वयंसेवक के रूप में ही स्वीकार किया था। वह भले ही जनसंघ में चले गए थे पर वह हमेशा कहते थे कि वह सर्वप्रथम संघ के स्वयंसेवक हैं। दीनदयाल उपाध्याय राजनीति को अच्छा क्षेत्र नहीं मानते थे तथा वह संघ छोड़कर राजनीति में जाना भी नहीं चाहते थे। लेकिन दीनदयाल श्री गुरुजी का आदेश कभी नहीं टालते थे। इसलिए संघ से जनसंघ में जाने के लिए भी श्री गुरु जी ने ही उन्हें मनाया। इस प्रकार से सारे कार्य करते हुए चाहे वह संघ के प्रचारक के रूप में संघ का कार्य हो या राजनीति में आकर जनसंघ का कार्य हो बहुत ही ईमानदारी और कठोर मेहनत से किए तथा आजीवन संघ के प्रचारक रह कर संघ के लिए कार्य किया।

पं० दीनदयाल उपाध्याय के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में किये गए कार्य

संघ के सम्पर्क में आने के बाद पं० दीनदयाल ने बहुत सारे महत्त्वपूर्ण कार्य किए। संघ का स्वयंसेवक बनने के बाद उन्होंने संघ का शिक्षण प्राप्त किया। इस शिक्षण को प्राप्त करते हुए उन्हें एक बात तो समझ आ गई कि केवल मात्र अंग्रेजों को गाली देना ही देशभक्ति नहीं है। स्वतंत्रता केवल नारेबाजी करने से प्राप्त नहीं होगी। स्वतंत्रता केवल संगठित एवं संस्कारित समाज के एकजुट होकर किए गए प्रयासों से ही प्राप्त होगी। जब अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद पं० दीनदयाल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बन गए तो उनके इस निर्णय से उनके परिजन बहुत परेशान हो गए। उनके मामा इस बात से भी नाराज थे कि प्रशासनिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद भी उन्होंने नौकरी करना स्वीकार नहीं किया। परिजनों को यह अपेक्षा थी कि दीनदयाल कम से कम अध्यापक की नौकरी तो स्वीकार कर ही लेंगे। लेकिन उस समय सभी परिवारजनों को बहुत दुःख हुआ जब दीनदयाल घर छोड़कर संघ के आजीवन प्रचारक बन गए। संघ का प्रथम दायित्व उन्हें उत्तर प्रदेश के लखीमपुर जिले में जिला प्रचारक के रूप में मिला। 1942 से 1945 तक वे लखीमपुर में जिला प्रचारक रहे। कुछ समय बाद उन्होंने विभाग का कार्य संभाला। उनकी बौद्धिक विद्वता और संस्कार क्षमता को देखते हुए 1945 में ही उन्हें उत्तर प्रदेश के सह प्रान्त प्रचारक का दायित्व दे दिया गया। संघ के उन प्रारम्भिक दिनों के बारे में लिखते हुए भाऊराव देवरस लिखते हैं कि जब संघ का कार्य बहुत ही चुनौतिपूर्ण था तथा संघ मार्ग बहुत ही कठोर था उस

समय पं० दीनदयाल ने उस कार्य को संभाला और कठिन मार्ग पर चल पड़े। भाऊराव देवरस उत्तर प्रदेश में संघ की कठोर नींव को रखने का श्रेय दीनदयाल को ही देते हैं।

महात्मा गांधी की हत्या के बाद संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। उस समय भी दीनदयाल प्रचार व सत्याग्रह संचालन के सूत्रधार बने। उस समय 'पांचजन्य' को भी सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया । दीनदयाल ने भूमिगत रहते हुए 'हिमालय' निकाला। इसी समय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संविधान लिख दिया गया जिसमें दीनदयाल उपाध्याय ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पं० दीनदयाल स्वयंसेवकों के वैचारिक शिक्षा ज्ञान के लिए देश भर में भ्रमण करते थे। संघ में कार्यकर्ता निर्माण का महत्त्वपूर्ण साधन था 'संघ शिक्षा वर्ग' जिसमें स्वयंसेवकों का मार्गदर्शन तथा शिक्षण दोनों होते थे। इन वर्गों को प्रारम्भ करने में भाऊराव देवरस तथा दीनदयाल का विशेष योगदान रहा। दीनदयाल ने संघ में रहते हुए कई साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाएं भी प्रारम्भ कीं। दीनदयाल के प्रयत्न और प्रेरणा से 1945 में मासिक 'राष्ट्रधर्म' व साप्ताहिक 'पांचजन्य' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। उसके बाद दैनिक के रूप में 'स्वदेश' का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया गया। इन्होंने दो महत्त्वपूर्ण साहित्यक कृतियों 'सम्राट चन्द्रगुप्त' व 'जगद्गुरु शंकराचार्य' का प्रणपन भी किया। दीनदयाल संघ के स्वयंसेवकों में अपने संत स्वभाव तथा सरलता के लिए हमेशा लोकप्रिय रहे। इस प्रकार संघ में रहते हुए पं० दीनदयाल ने संघ तथा देश दोनों के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दिया।

निष्कर्ष

यहाँ हम कह सकते हैं कि पं० दीनदयाल उपाध्यय आजीवन संघ के प्रचारक रहे तथा निजी जीवन व निजी हितों को एक तरफ रखकर संघ का कार्य किया। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में संघ के कार्य को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने संघ के प्रचारक के रूप में रहते हुए जनसंघ का कार्य भी किया तथा जनसंघ को मजबूत करने में भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। संघ में पं० दीनदयाल का स्थान इतना महत्त्वपूर्ण था कि जब उनकी मृत्यु हुई और श्री गुरु जी वायुसेना के जहाज में रखे उनके शव को देखने मुगलसराय पहुँचे तो रूंधे गले से उनके मुख से यही शब्द निकले "मेरा तो सब कुछ चला गया।" दीनदयाल जी का संघ में अतुलनीय योगदान है तथा जब तक संघ कार्य करता रहेगा पं० दीनदयाल का नाम हमेशा सुनहरे अक्षरों में लिखा जायेगा। हम यह भी कह सकते हैं कि पं० दीनदयाल उपाध्याय केवल संघ के लिए ही बने थे। इसलिए ही तो वह जब जनसंघ में भी चले गए तब भी वह अपने आपको संघ का स्वयंसेवक ही मानते थे और उन्होंने अपनी अन्तिम सांस तक संघ कार्य को ही अपना ध्येय कार्य माना।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा महेशचन्द्र, (2018) पं० दीनदयाल उपाध्यय, कर्त्तव्य एवं विचार, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन। (पृ० 77)
2. शर्मा महेशचन्द्र, (2016) दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय (पन्द्रह खण्ड), नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन एवं एकात्म मानवदर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान।
3. राव पी० मुरलीधर (2015) पं० दीनदयाल उपाध्याय, भारतीय जनता पार्टी, नई दिल्ली (पृ० 4, 10, 11)
4. शर्मा, महेशचन्द्र (2011) पत्रकारिता और दीनदयाल उपाध्याय, नई दिल्ली।

❖◆❖